अथवा

(ब) न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरत्थं न मम्मयं।

अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्संतरेण वा॥

4. आचारांग सूत्र के आधार पर मानव जीवन के सार को संक्षेप में बताइए।
5. उत्तराध्ययन के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के बाधक तत्वों को स्पष्ट कीजिए।
6. मुक्तक काव्य की परिभाषा देते हुए उसका स्वरूप बताइए।
7. भगवती आराधना के अनुसार क्रोध मनुष्य के लिए हानिकारक क्यों है ? स्पष्ट कीजिए।
8. 'भावपाहुड' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
9. 'सिप्पिपुत्तस्स' कहा का कथासार लिखिए।

खण्ड—स **2×20=40**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

10. आचार्य कुन्दकुन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की समीक्षा कीजिए।
11. रोहिणीणाए में उल्लेखित नारी के आदर्श का वर्णन कीजिए।
12. आचारांग सूत्र के आधार पर दार्शनिक तथ्यों का विवेचन कीजिए।
13. 'लज्जावग्ग' की भाषा शैली की समीक्षा कीजिए।

DPL–02

December – Examination 2023

Diploma in Prakrit Language Examination

प्राकृत गद्य-पद्य

Paper : DPL-02

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **10×2=20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) 'समणसुत्त' के प्रथम खण्ड का क्या नाम है ?

   (ii) आचारांग के अनुसार सब पापकर्मों को कौन क्षीण कर देता है ?

(iii) आगम किसे कहते हैं ?

(iv) 'दशवैकालिक' ग्रन्थ किस प्राकृत में लिखा गया है ?

(v) 'लज्जावग्ग' के लेखक कौन हैं ?

(vi) 'भगवती आराधना' के अनुसार कौन आराध्य है ?

(vii) 'दर्शनपाहुड' में कितनी गाथाएँ हैं ?

(viii) 'कोण्डकुन्द' किन आचार्य का अपरनाम है ?

(ix) 'पाइयविण्णाणकहा' से कौनसी कहा (कथा) ली गई है ?

(x) आगम के द्वादश में छठा अंग क्या है ?

खण्ड—ब **4×10=40**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) पुरोहिअे कहेइ—'अज्ज रत्तीए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं।' ते दोण्णि जामायरा संझाए गामे विलसिउं गया, विविहकीलाओ कुणंता नट्टाइं च पासन्ता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअं दारं दट्ठूण दारुघाडणाए उच्चसरेण अक्कोसंति—'दारं उग्घाडेसु' त्ति तया दारसमीवे सयणत्थे पुरोहिओ जागरंतो कहेइ—मजझरत्तिं जाव कत्थं तुम्हे थिआ ? अहुणा न उग्घाडिस्सं, जत्थ उग्घाडिअद्दारं अत्थि, तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिओ। तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरंगसालाए गया। तत्थ आत्थरणाभावे अईवसीयबाहिया तुरंगमपिट्ठच्छाइ आवरणवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया

विजयरामेण जामाउणा चिंतिअं—एत्थ सावमाणं ठाउं न उइअं। तओ सो मित्तं कहेइ—हे मित्त ! अम्हं सुहसज्जा का ? इमं भूलोट्टणं च कत्थ ? अओ इओ गमणं चिअ वरं। स मित्तो बोल्लेइ—'एआरिसदुहे वि परन्नं कथ ? अहं तु एत्थ ठाहिस्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ', तया गच्छसु। तओ सो पच्चूसे पुरोहियसमीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठु त्ति कहेइ। एवं सो जियरामो 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गओ।

अथवा

(ब) एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण, पडिमाए हिट्ठंमि गूढं नियनामंकियचिण्हं करिऊण, तं मुत्तिं नियमित्तद्दारेण भूमीए अंतो निक्खेवं कारेइ। कालंतरे गामंतराओ पिया समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ—'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए गणेसस्स पहावसालिणी पडिमा अत्थि।' तया लोगेहि सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए गणेसस्स संदुरयमा अणुवमा मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवे लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** पद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(अ) भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं॥